कबीर के दोहे–

माँखी गुड़ में गड़ि रहे, पंख रहयो लिपटाय।
हाथ मले और सिर धुने, लालच बुरी बलाय।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय।
जो मन खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय।

बड़ा हुआ सो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करे, आपौ सीतल होय।

साईं इतना दीजिए, जा में कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।

माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर
कर का मनका छाँड़ि के, मन का मनका फेर।

कबीरदास .

प्रश्न–1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो।

1. लालच करना बुरा है। इसके लिए कबीर नें किसका उदाहरण दिया है ?

2. खजूर के पेड़ के द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं ?

प्रश्न–2. यह अर्थ किस दोहे का है। लिखो।

1. कबीर दास जी कहते हैं कि हमेशा मीठी बोली बोलना चाहिए। इससे खुद को भी सुख मिलता है और दूसरों को भी।

2. कबीर दास जी भगवान से प्रार्थना करते हैं कि भगवान मुझे केवल इतना धन दीजिए जिसमें परिवार का पालन–पोषण भी हो जाए और मेहमान भी भूखा न जाएं।

प्रश्न–4. अधूरे दोहों को पूरा कीजिए

ऐसी बानी बोलिए .....
औरन को सीतल करें .....
बुरा जो देखन मैं .....
जो मन खोजा .....

प्रश्न–5. शब्दों के अर्थ लिखो।

बानी माँखी पंथी छाँड़ि साईं

स्नेगुरका - बर्फ की कुमारी

स्नेगुरका - ये नाम हमारे यहां सुनने को नहीं मिलता। इसे दो-तीन बार बोल कर देखो, बोला जाता है कि नहीं। स्नेगुरका का मतलब है – बर्फ की कुमारी। ये है उसकी कहानी –

दूर एक जगह पर, जहां ठंड के दिनों में बर्फ गिरती थी – ठंडी, मुलायम, रूई जैसी बर्फ – वहां मरूशा नाम की एक औरत और उसका पति इवान रहते थे। उनके कोई बच्चे न थे। वे जब आस-पड़ोस के बच्चों को खेलते देखते तो बड़े खुश होते।

ठंड के मौसम में एक दिन, ताज़ी, सफेद, मुलायम बर्फ चारों ओर पड़ी थी। इवान और उसकी पत्नी बच्चों को खेलते और हंसते देखकर खुश हो रहे थे। बच्चे बर्फ का आदमी बना रहे थे। बर्फ का आदमी मरूशा और इवान की आंखों के सामने बढ़ता जा रहा था और उसे बढ़ते देखने में दोनों को बहुत मज़ा आ रहा था।

अचानक इवान ने कहा,'मरूशा, चलो हम भी बर्फ से आदमी बनाएं।'

मरूशा तैयार हो गई। हां, हां 'क्यों न हम लोग भी अपना मन बहलाएं। पर बर्फ का आदमी ही क्यों बनाएं? बर्फ की एक बच्ची बनाते हैं।'

यह कह कर वे दोनों बर्फ से एक बच्ची बनाने में लग गए। उन्होंने छोटा-सा एक शरीर बनाया, छोटे-छोटे हाथ और नन्हे-नन्हे पांव भी बनाए। फिर उन्होंने बर्फ का एक छोटा-सा गोला बनाया जिसे उन्होंने बच्ची के सिर का आकार दिया।

पास से निकल रहे एक आदमी ने पूछा,'तुम लोग क्या कर रहे हो?'

'हम लोग बर्फ की एक बालिका बना रहे हैं।' मरूशा ने जबाब दिया।

मरूशा ने बर्फ की लड़की के सिर पर नाक और ठोड़ी लगाई, और आंखों के लिए दो छोटे-छोटे गड्ढे किए। जैसे ही बर्फ की लड़की बन कर तैयार हुई वह थोड़ी-सी हिली। इवान और मरूशा दंग रह गए। इवान ने उस लड़की की गर्म सांस महसूस की। वह थोड़ा पीछे हटा तो उसने देखा कि बर्फ की इस कुमारी की आंखें नीली और होंठ गुलाबी थे। उसके होंठों पर प्यारी-सी मुस्कान थी।

'यह क्या?' इवान ठिठक कर बोला। बर्फ-कन्या ने अपना सर हल्के-से झुकाया तो उसके अब सुनहरे बालों से हल्के-से बर्फ गिरी। वह बर्फ में अपने हाथ-पांव हिलाने लगी, बिल्कुल असली बच्ची की तरह।

'इतान, इवान!' मरूशा चिल्लाई। 'देवताओं ने हमारी प्रार्थना सुन ली।' वह कन्या को गले लगाकर चूमने लगी। 'ओह, स्नेगुरका! मेरी अपनी प्यारी-सी बर्फ की बेटी।' उसने कहा और उसे उठा कर घर के अंदर ले आई।

हर घंटे में स्नेगुरका बढ़ती जाती और खूबसूरत होती जाती। इवान और मरूशा अब खुशी से फूले न समा रहे थे।

स्नेगुरका बहुत ही प्यारी बच्ची थी। सभी उसे बहुत प्यार करते। वह और बच्चों के साथ बर्फ में खेलती। वह अपने छोटे-छोटे हाथों से बर्फ की सुंदर चीज़ें बना लेती। स्नेगुरका के साथ सभी खुश थे – इवान, मरूशा, आसपास का पूरा मोहल्ला।

फिर आखिर ठंड का मौसम खत्म होने लगा। वसन्त की कुनकुनी धूप बर्फ को पिघलाने लगी। हरी दूब निकल आई। पक्षी के गान शुरू हो गए।

बाकी सब बच्चे वसन्त की बहार से खुश बाहर खेलने निकल आते, पर स्नेगुरका खिड़की के पास बैठी दुखी होती रहती।

'क्या बात है बेटी?' मरूशा ने उससे पूछा। तुम इतनी दुखी क्यों हो? क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है?'

'कुछ नहीं मां, मैं बिल्कुल ठीक हूं।' स्नेगुरका ने उत्तर दिया।

ठंड की आखिरी बर्फ पिघल चुकी थी। सब जगह फूल निकल आए थे। वसन्त की बहार चारों तरफ थी। चिड़ियां भी चहक रही थीं। सब खुश थे पर स्नेगुरका थी कि दुखी होती चली जाती थी।
वह अपने दोस्तों के पास नहीं जाती। धूप से डरकर छिप जाती। उसे छांवदार पेड़ों के नीचे, झरनों के पास, ठंडक में खेलना ही पसंद था। वह रात को सबसे ज़्यादा खुश रहती थी, चाहे रात के भयंकर तूफान भी आए या ओले गिरें। जब ओले पिघलने लगते तो वह रोने लगती।

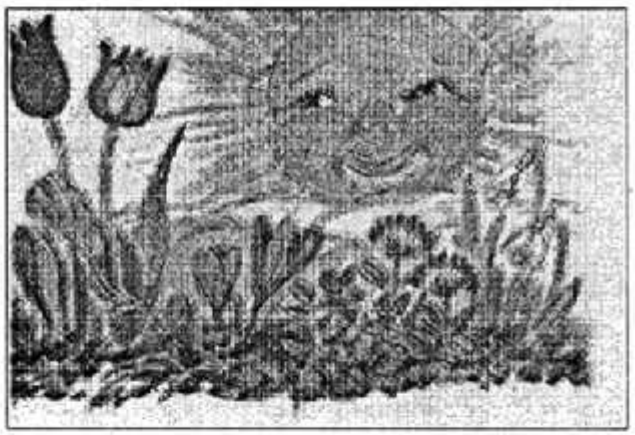

फिर गर्मी के दिन आ गए। और एक दिन स्नेगुरका के दोस्तों ने उसे अपने साथ जंगल में फल और फूल बटोरने के लिए बुलाया। स्नेगुरका जाना नहीं चाहती थी पर उसकी मां के बहुत कहने पर उनके साथ चली गई। 'जाओ मेरी प्यारी स्नेगुरका, जाकर खेलो। और बच्चों, तुम भी इसका ध्यान रखना। तुम जानते हो कि ये हमें कितनी प्यारी है।' मरूशा ने कहा।

बच्चे खेलते-कूदते सुंदर फूल और झरबेरियां इकट्ठी कर रहे थे। कुछ बच्चों ने जंगली फूलों की माला भी बनाई। माला पहनकर सब बच्चे गीत गा रहे थे।

'हमें देखो। हमारे साथ आगे चलो।' बच्चे स्नेगुरका को आवाज़ देते। वे नाचते-गाते आगे बढ़ रहे थे कि पीछे से अचानक उन्हें हल्की-सी 'आह' सुनाई दी। उन्होंने मुड़कर देखा तो पीछे बर्फ का एक छोटा-सा ढेर था जो तेज़ी से पिघल रहा था। स्नेगुरका अब उनके साथ नहीं थी।

1. *अपनी कापी में इन सवालों के उत्तर लिखो।*

(क) इवान और मरूशा कैसी जगह रहते थे?

(ख) दोनों ने बर्फ की बालिका कैसे बनाई? अपने शब्दों में बताओ कि पहले उन्होंने क्या किया, फिर उसके बाद क्या किया . . . और उसके बाद?

(ग) स्नेगुरका के लिए पाठ में कौन-कौन से और शब्द उपयोग में आए हैं? जैसे कन्या, बेटी ..... आदि-आदि।

- वसंत आने पर बाकी बच्चे क्यों खुश थे? और स्नेगुरका क्यों दुखी थी?

- जंगल में स्नेगुरका को क्या हो गया?

- खबर सुनकर इवान और मरूशा पर क्या गुज़री होगी? दोनों ने क्या कहा होगा?

- **सही या गलत** का निशान लगाओ। *वसंत आने पर-*

1. कुनकुनी धूप निकल आई थी।
2. ठंड बढ़ गई थी
3. हरी दूब दिखने लगी।
4. फूल निकल आये थे।
5. बादल निकल आये थे।
6. चिड़ियों के गीत सुनाई देते थे।

● अगली ठंड में क्या स्नेगुरका फिर से वापस लौटेगी?

- अगर हमें एक छोटी-सी लड़की बनानी हो तो हम किन-किन चीज़ों की बना सकते हैं?
मिट्टी, बांस, टटेरा, तीलियां, कागज़ . .

- नीचे मैंने **स्नेगुरका की कहानी** दी है। ध्यान से देखो।

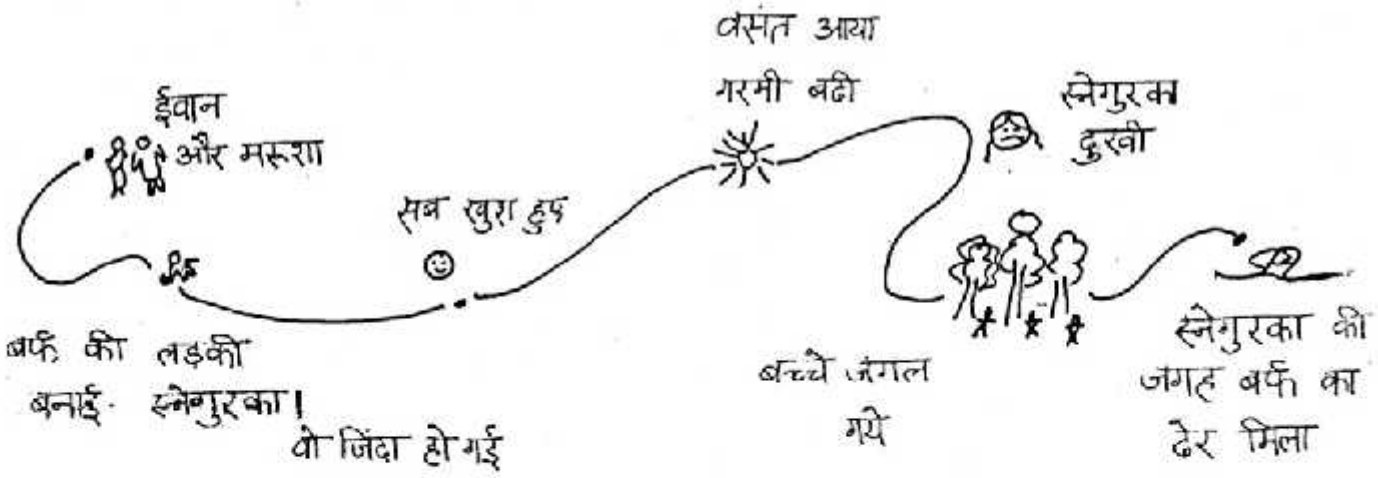

अब अगली कहानी नीचे के चित्र को देखकर तुम बनाओ।

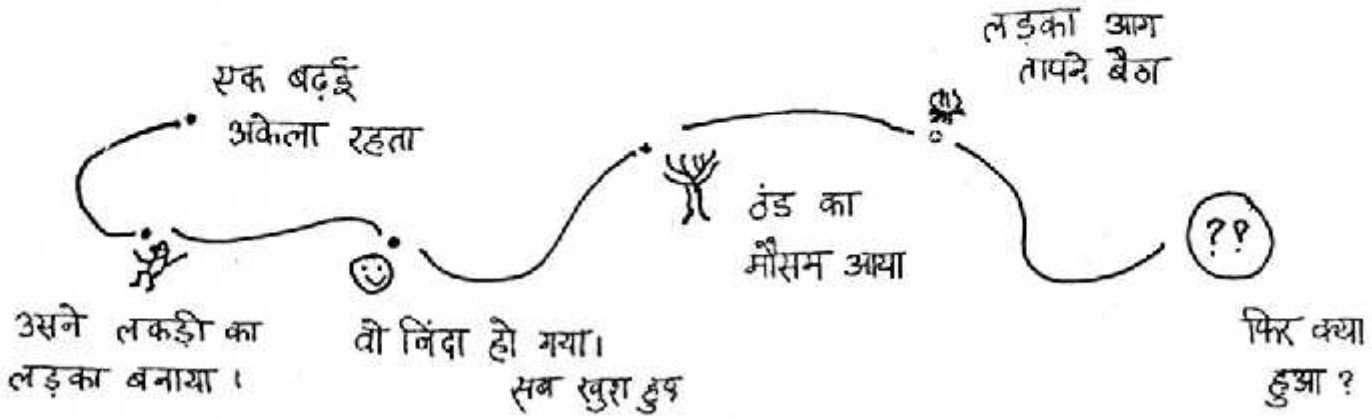

- नीचे तीन बच्चों की बनाई हुई मिट्टी की स्नेगुरका हैं। बताओ इनमें सबसे लम्बी कौन है? सबसे चौड़ा सिर किसका है? स्केल से नाप कर पता करो।

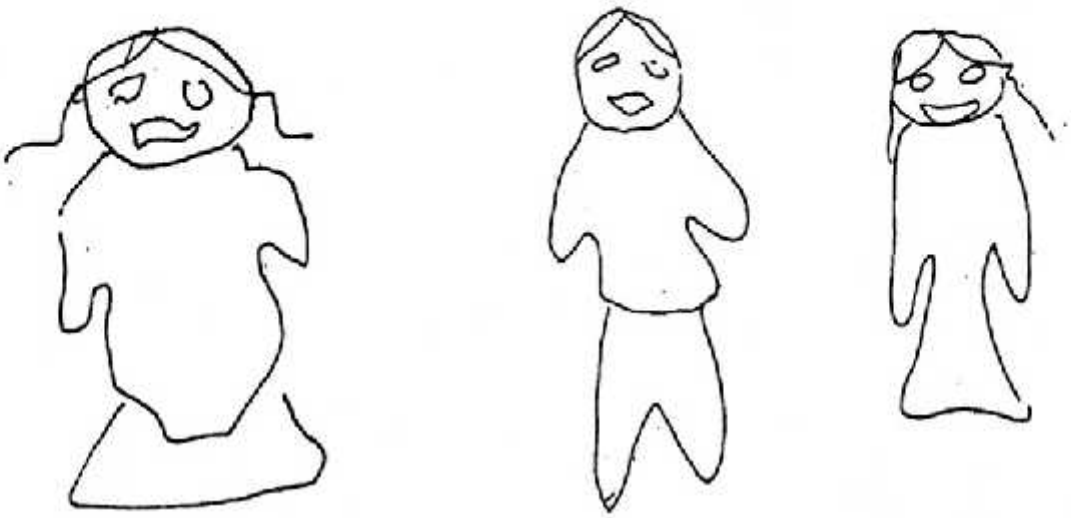

- **बूझो मैं कौन** (सारे उत्तर कहानी में ही हैं) -

1. ठंडी, सफेद, मुलायम रूई जैसी हूं मैं –
2. छोटे हाथ, नन्हें पांव, नीली आंखें और गुलाबी होंठ –
3. कुनकुनी धूप, चहकते पक्षी, सुंदर फूल –

अपने मन से ढेर सारी ऐसी और पहेलियां बनाओ और एक दूसरे से पूछो।

- अगर स्नेगुरका मिट्टी की बनी होती तो उसे किस चीज़ से बचना पड़ता?
  और अगर कांच की बनी होती तो. . . . और अगर कपड़े की होती तो: . . . .

उल्लू की बोली

आफन्ती अक्सर कहता रहता था कि वह पक्षियों की बोलियाँ समझ सकता है। यह बात बादशाह के कानों में पड़ी तो उसने आफन्ती को अपने साथ शिकार खेलने बुला लिया।

चलते-चलते वे एक गुफा के सामने जा पहुँचे, जो बुरी तरह ढह चुकी थी। उसके खण्डहरों पर एक उल्लू बैठा हुआ था। उल्लू की आवाज सुनकर बादशाह ने पूछा : "आफन्ती! यह उल्लू क्या कह रहा है?"

"जहाँपनाह, यह कह रहा है कि अगर आपने रियाया पर जुल्म ढाना बन्द न किया तो वह दिन दूर नहीं जब आपकी सल्तनत भी इस गुफा की ही तरह खण्डहर बन जाएगी।"

कुछ दिनों बाद आफन्ती ने किसी से सोने के कुछ टुकड़े उधार लिये और अपने गधे पर सवार होकर एक बालू तट पर जा पहुँचा। वहाँ वह बड़ी संजीदगी के साथ छलनी से सोने के टुकड़ों को छानने लगा। कुछ देर बाद, बादशाह शिकार खेलता हुआ वहाँ से गुजरा। आफन्ती की यह हरकत उसे बड़ी अजीब लगी। उसने पूछा :

"आफन्ती, तुम यह क्या कर रहे हो?"

जहाँपनाह, मैं इस वक्त सोने की बुआई में मशगूल हूँ।"

यह सुनकर बादशाह को और भी ताज्जुब हुआ। वह बोला :

"मेरे आफन्ती, यह तो बताओ, सोना बोने से तुम्हे क्या फायदा होगा?"

"क्या आपको यह भी नहीं मालूम, जहाँपनाह?" आफन्ती ने जवाब दिया, "आज सोना बो रहा हूँ और शुक्रवार को इसकी फसल काट लूँगा। पहली फसल में मुझे कम सोना जरूर मिलेगा।"

यह सुनते ही बादशाह के मुँह से लार टपकने लगी। उसने सोचा, इस बढ़िया व्यापार में वह भी साझेदार क्यों न बन जाए? वह मुस्कराता हुआ आफन्ती से बोला :

"आफन्ती भाई, तुम इतना कम सोना बोकर अमीर कैसे बन सकते हो? अगर सोना ही बोना चाहते हो तो ज्यादा से ज्यादा बोओ। बीज के लिए सोना काफी न हो, तो मेरे महल से ले आओ। जितना चाहो, ला सकते हो। अब मैं तुम्हारा साझेदार बन गया

हूँ। फसल में से अस्सी फीसदी हिस्सा मुझे दे देना। बोलो, तैयार हो?"

"ठीक है जहाँपनाह, मुझे आपकी शर्त मंजूर है।"

दूसरे दिन आफन्ती महल से दो चिन सोना उठा लाया और एक हफ्ते बाद दस चिन सोना बादशाह को भेंट कर आया। सोने की चमचमाती सिल्लियाँ देखकर बादशाह का दिल बाँसों उछलने लगा। उसने फौरन अफसरों को हुक्म दिया कि वे शाही भण्डार में मौजूद सारा सोना बोने के लिए आफन्ती को दे दें।

घर लौटकर आफन्ती ने सारा सोना गरीबों में बाँट दिया।

एक हफ्ते बाद वह मुँह लटकाकर खाली हाथ बादशाह के पास जा पहुँचा। उसे देखते ही बादशाह खुशी से उछल पड़ा और बोला:

"तुम आ गए हो, आफन्ती? पर सोना ढोने वाली गाड़ियों का काफिला कहाँ है?"

"जहाँपनाह, क्या बताऊँ? मैं बिल्कुल बरबाद हो गया हूँ। मेरी किस्मत फूट गई है।" आफन्ती माथा पकड़कर रोता हुआ बोला। "इस बीच एक भी बूँद पानी नहीं पड़ा और सोने की सारी फसल सूख गई। फसल तो दूर रही, बीज से भी पूरी तरह हाथ धोना पड़ा।"

आफन्ती की बात सुनकर बादशाह गुस्से से पागल हो उठा और गरजकर बोला :

"तुम सफेद झूठ बोल रहे हो, आफन्ती। क्या कहीं सोना भी सूख सकता है? तुम मुझे धोखा देना चाहते हो।"

"मेरी बात पर आपको ताज्जुब क्यों हो रहा है, जहाँपनाह?" आफन्ती ने उत्तर दिया। "अगर आपको इस बात पर यकीन नहीं है कि सोना सूख सकता है, तो इस बात पर कैसे यकीन हो गया कि सोने को ज़मीन में बोया जा सकता है और उसकी फसल काटी जा सकती है।"

बादशाह अवाक रह गया, जैसे उसके मुँह में किसी ने मिट्टी का लोंदा ठूँस दिया हो।

अभ्यास :

1. आफन्ती ने राजा का सारा सोना लेकर लोगों में क्यों बांट दिया?
2. आफन्ती के किस्से पढ़ने के बाद तुम्हारे मन में आफन्ती का क्या चित्र बनता है? वह कैसा आदमी है? उसके बारे में 5-10 वाक्य लिखो।
3. कहानी पढ़ने के बाद तुम्हारे मन में राजा के व्यक्तित्व का क्या चित्र उभरता है? क्या वह अकलमंद है या बुद्धू है? अपनी प्रजा की देखभाल करता है या नहीं?

4. इन मुहावरों के अर्थ लिखो और उनसे वाक्य बनाओ - दिल बाँसों उछलने लगा, खाली हाथ, खुशी से उछल पड़ा, किस्मत फूट गई, सफेद झूठ।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

प्रश्न–1 पढ़ो

शब्द	शुरू में जोड़ा	नया शब्द बना	वाक्य बनाया
वार	स	सवार	वह गधे पर सवार था।
महल	ताज	ताजमहल	आगरा में ताजमहल है।
वाक	अ	अवाक	बादशाह अवाक रह गया

(अ) अब (ना, मन, शि, जहाँ) को शब्दों के शुरू में लगाकर नए शब्द बनाइये।

शब्द	जोड़ा	नया शब्द बना	वाक्य बनाया।
मुमकिन	_____	_____	_____
पसंद	_____	_____	_____
पनाह	_____	_____	_____
कार	_____	_____	_____

(ब) अब (वार, दार, कर, वाला, वान,) को शब्द के अन्त में जोड़कर शब्द बनाइये।

शब्द	जोड़ा	नया शब्द बना	वाक्य बनाया।
शुक्र	वार	शुक्रवार	आज दिन शुक्रवार है।
साझे	_____	_____	_____
दूध	_____	_____	_____
कर्ज	_____	_____	_____
रवि	_____	_____	_____
पान	_____	_____	_____
गाड़ी	_____	_____	_____
पहल	_____	_____	_____

जो शब्द मूल शब्दों के आगे जुड़कर नये शब्द बनाते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं जैसे– शि, ना, आदि। कुछ शब्द मूल शब्दों के बाद में जुड़कर नये शब्द बनाते है उन्हें प्रत्यय कहते हैं जैसे – वार, वान,

प्रश्न–2. इस पैराग्राफ को पढ़ो।

बादशाह ने कहा " आफन्ती भाई, तुम इतना कम सोना बोकर अमीर कैसे बन सकते हो? अगर सोना ही बोना चाहते हो तो ज्यादा से ज्यादा बोओ। बीज के लिए सोना काफी न हो, तो मेरे महल से ले आओ। जितना चाहो, ला सकते हो। अब मैं तुम्हारा साझेदार बन गया हूँ।

अब इन शब्दों के मतलब लिखो।

शब्द	मतलब	शब्द	मतलब
साझेदार	_____	बादशाह	_____
अमीर	_____	ज्यादा	_____
काफी	_____	महल	